This is a very serious charge. Somebody who has been holding his brief in a court of law may now be protecting him because he is now enjoying a special position in the corridors of power. Mrs. Natarajan is here, my good friend, Mr. Reddy is here fighting for honest causes. They should not tail to discharge their duties only because they have changed their positions in this House. Since they are Ministers, they should not...*(Interruptions)*...

SHRI JOHN F. FERNANDES (GOA): Mishraji is here.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Of course, I agree. I stand corrected. I feel, Members, in the Opposition, who have been fighting for certain norms and propriety, should not forget their earlier commitments because they are occupying some position in the Government now.

In the case of Ashok Jain, the search that was conducted by the Intelligence Bureau in the office of the Enforcement Directorate is unprecedented. It is unprecedented. If such things are done, the investigating officers would lose their courage; they would lose their honesty.

This would only be a signal asking them to fall in line with the wishes of their masters. If they also fall in line with the wishes of their masters at the centre of power, there would be nothing which is known as propriety; there would be - nothing which is known as law and order in our country. Therefore, I demand...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AJIT P.K. JOGI): Thank you.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Therefore, I demand that Mrs. Jayanthi Natarajan may kindly take note of it and she should assure the House that she would convey our deep sense of anguish at the way the Ashok Jain's case is being handled.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AJIT P.K. JOGI): Shri Shatrughan Sinha.

RE. ABSENCE OF CRITERIA FOR DISTRIBUTION OF FUNDS TO DIFFERENT AGENCIES FOR PRODUCTION OF FILMS IN CONNECTION WITH GOLDEN JUBILEE OF INDEPENDENCE

श्री शत्रुघ्न सिन्हा (बिहार): धन्यवाद उपसभाध्यक्ष महोदय, जिस तरह से आजादी की पचासवीं सालगिरह का प्रश्न इस साल मनाया जा रहा है, जिस तरह से कुबेर के खजाने की तरह धन लुटाया जा रहा है, जिस तरह से धन का दुरुपयोग हो रहा है, ऐसा दिखाई पड़ता है कि सरकार रातों-रात बहुत अमीर हो गयी है । हालांकि आंकड़े कुछ और है, आकंड़े आपको पता है । मैं बहुत संक्षेप में कंहुगा कि अभी भी देश की एक तिहाई जनता गरीबी की रेखा के नीचे है तो बिहार में 50 परसेंट से ज्यादा जनता गरीबी की रेखा के नीचे है । हयूमैंन डैवलपमेंट इंडैक्स – मानव विकास सूचकांक यू.एन.ओ. से प्रकशित – आजादी की पचासवीं सालगिरह जब हम मना रहे है उसमें दिया है कि हिन्दुस्तान का नम्बर 20 – 40 – 50 – 60 – 100 देशों में नही है बल्कि 135वां नम्बर है और उसका आधार होता है पर-कैपिटा इनकम, हैल्थ और ऐजुकेशन । अब में मुख्य मुद्दे की ओर आता हूं । भिन्न-भिन्न सरकारी विभागों में बहुत आर्थिक खर्चा हो रहा है, जश्न मनाने की कोशिश की जा रही है । मै आभारी हूं कि इस वक्त बहुत अच्छे और बहुत अच्छी छवि के हमारे मंत्री रेड्डी साहब सामने मोजूद है और मुझे यह कहने का मौका मिला है । उम्मीद करता हूं कि आप और आपकी सरकार इस पर गौर करेगी । जिस तरह से दूरदर्शन ने, मिनिस्टरी ऑफ इनफॉमेशन ऐड ब्रॉडकास्टिंग ने चंद लोगों को जो या तो सरकारी लोग है या सरकार के पंसदीदा लोग है, अथवा मंत्री के पंसदीदा है, इन पर नही कहता हूं क्योंकि यह तो अभी-अभी आए है, कि एक-एक करोड़ रूपये की राशि पांच व्यक्तियों को चुन कर जिसमें सईद मिर्जा है, गिरीश कर्नाड है, श्याम बेनेगल है, भूपेन हजारिका भी है और एक और महोदय वुददेच दास गुप्ता जी है, इन लोगों को दी है । मैं इस पर ऐतराज नही कर रहा हूं, यह सारे गुणी लोग है, अच्छे लोग है । सवाल यह उठता है कि एक-एक करोड़ रूपये की राशि इनको दी गयी है, यह पचास साल की उपलब्धियों के ऊपर है और टेली सीरियल बनाने की लिए दी गयी है । आधे घंटे की फिल्म के लिए एक-एक करोड़ रूपये दिये गये है । अब दो-तीन सवाल उठते है । 16 प्रान्तीय, क्षेत्रीय भाषाओं में फिल्में बनाने के लिए 16 रीजनल सैंटर्स को एक-एक

करोड़ रूपये दिये गये है । फिलहाल जो पांच नाम सलैक्त किये गये है, उनकी तरफ मै ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । Of course, they are all qualified people. They arc all competent people. But what are the criteria? इसका आधार क्या है? अगर आधार वह है कि सब गुणी लोगों को एक-एक करोड़ रूपये देने है तो उनसे भी ज्यादा गुणी लोग है । गौतम घोष है, मृषाल सेन भी है । अगर गिरीश कर्नाड है तो उधर मणि रत्नम भी है, शाहजी है, एक से एक बड़े लोग है और अगर दूरदर्शन यह कहता है कि साहब, वह यह लोग है जिनकी बहुत अच्छी कमर्शियल सकसैसफुल फिल्मे आयी है, वह स्टार्ट है, जिन्होने साबित किया है कि उनकी अच्छी-अच्छी फिल्में आयी है तो उनसे ज्यादा अच्छी-अच्छी और बड़ी-बड़ी फिल्में आयी है । रमेश सिप्पी की "बुनियाद" आयी है, "हम लोग" आया है, रामानन्द सागर की "रामायण" आयी है, प्रिया चौपड़ा की "महाभारत" आयी है । बहुत सारे लोग हैं । किस आधार पर उन्हें यह रूपया दिया गया है? दूसरा सवाल यह उठता है कि "टके सेर भाजी, टके सेर खाजा ।" क्या सबके लिए एक-एक करोड़ रूपये?Where is the transparency? Where is the accountability? What are the criteria? क्या उनसे सबजैक्ट मांगा गया है ? हो सकता है कि आधें घंटे के टेली सीरियल के लिए सिर्फ 40 लाख रूपये ही चाहिए, हो सकता है किसी को 70 लाख रूपये ही चाहिए । मैं जानना चाहता हूं कि क्या ऐसे ही मुट्ठी बन्द करके एक करोड़ रूपया बांट दिया जाना चाहिए? जबकि आपको विदित होगा कि हमारे बिहार में, अपने पटना में स्टूटियों 42 करोड़ रूपये से ज्यादा की लागत से बना । उस स्टूडियों का उदघाटन हुआ और दो घंटे के अन्दर ही उसमें ताला लगा दिया था । उसमें ताला लगे हुए एक साल से ज्यादा का समय हो गया । बिहार के उस स्टूडियो के लिए मिनिस्ट्री के पास पैसा नहीं है । हमारे सदन के तमाम सदस्यों को पता होगा कि 150 से ज्यादा कर्मचारी नियमित न होने की वजह से केजुअल कर्मचारी के रूप में काम कर रहे हैं । महीने में तीन-तीन , चार-चार दिन उनको बड़ी मुश्किल से काम मिलता है, और आज वे भूखमरी के कगार पर है । उनके भविष्य की चिन्ता सरकार को क्यो नहीं है? अब फिफथ पे कमीशन के लागू होने के बाद खाली पडे पर्दो को भरने की मनाही हो गई है तो अब उनका क्या होगा जो इतने सालो से वहां पर भूखे मर रहे हैं, जिनकी हालत खराब है, जिनकी वेदना, जिनका दर्द सुनने वाला कोई नहीं है ?

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैंने पहले ही कहा था कि मैं संक्षेप में बात कहूंगा । मैं आपके जरिए से कहना चाहता हूं कि बात ट्रांसपेरेंसी की है, बात एकाउन्टेबिलिटी की है । मुझे गिरीश कर्नाड या श्याम बेनेगल या बाकी जितने नाम मैनें लिए, भूपेन हारिका? का काबिलीयत पर मुझे कोई शक नहीं है। भूपेन हजारिका एक महान संगीतकार है? लेकिन उनकी तुलना फिल्मकारों में नहीं है । आखिर इसका आधार क्या है? इसके पीछे धांथली है, इसके पीछे स्कैम है । हम अपने देश के महान सपूतों जिनके बलिदान, संघर्ष, तपस्या की वजह से हमको आजादी हासिल हुई है तो क्या हम उनकी याद में सिर्फ इन बातों का जश्न मनाकर शोर-शराब करेंगे, महाराष्ट्र में एक करोड़ पांच लाख रूपये एक रात के लिए खर्च हुए है और उनको भारत सरकार की ओर से फण्ड प्रोवाइड किया गया है इसलिए कि यह नेशनल इश्यु है । ऐसा कई प्रान्तों में हो रहा है । आप फिर क्यों ऐसा कर रहे हैं? आप अधरे कामों को परा कीजिए । 50 साल की आजादी में आप उनकी आंखों से आंसू पूछिए जो हमारा केजुअल स्टाफ है, जो लोग भूखे मर रहे हैं, जिनका हक बनता है, उनको दीजिए और इसका दृढ़-संकल्प कीजिए....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AJIT P. K. JOGI): Please conclude now.

श्री शत्रुघ्न सिन्हा : महोदय, मैं कनकलूड ही कर रहा हूं । मैं आपका आभार व्यक्त करते हुए यह कहना चाहूंगा कि सरकार इस बात पर गौर करे । उनके आसूं पीछे उन्हें उनका अधिकार मिले । यही सच्ची भावना, यही सच्ची सलामी होगी भारत के उन महान सपूतों को । आप स्वतंत्रता की 50 वीं साल गिरह मनाने जा रहे हैं । मैं कहना चाहता हूं कि आप इस गोल्डन जुबली ईअर में दृढ-संकल्प के साथ अधूरे कामों को पूरा कीजिए और देश की गरिमा को और गौरवशाली बनाइये । मुझे उम्मीद है कि सरकार मेरी बात पर गौर करते हुए इसकी जांच-पड़ताल करेगी और जो दोषी हैं, उनको सजा देगी और टेण्डरों में पारदर्शिता के आधार पर , गुणों के आधार पर ऐसी बातों का फैसला करेगी । धन्यवाद ।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी (राजस्थान) **:** महोदय, शत्रुघ्न सिन्हा जी ने जो भावना रखी है, मैं उसका समर्थन करता हूं ।

THE MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRI S. JAIPAL REDDY): Sir, I do not disagree with Mr. Shatrughan Sinha when he says that some of the failures are notable, but that cannot be a pretext for not celebrating the completion of fifty

years of freedom, fifty years of democracy.

SHRI RAGHAVJI (MADHYA PRADESH): He is not against it.

SHRI SHATRUGHAN SINHA: But' not at the cost of the poor people.

डा. वाई लक्ष्मी प्रसाद (आंध्र प्रदेश) **:** मंत्री जी की बात तो सुनने दीजिए ।

SHRI S. JAIPAL REDDY: Shatrughanji, I am really happy that you have expressed concern at those living below the poverty line: I share your concern.

SHRI NARENDRA MOHAN (UTTAR PRADESH) He was talking of a scam.

SHRI S. JAIPAL REDDY: He has mentioned many points. I am trying to address as many points as possible. But let me state that along with notable failures, our successes have also been spectacular. We have been a great democracy for the last fifty years and we are the only great democracy in the Third World. In my view, ours is not only the largest democracy but ours is the greatest democracy in the world. In spite of educational, economic and social limitations, we have had an unbroken democracy. We need to celebrate our Green Revolution and our high-tech achievements. There arc many things over which we need to gloat. There are many positive achievements. I don't think that we should allow a message of pessimism to go" from this House. I am sure, Mr. Shatrughan Sinha who is a very patriotic person, would not like such a signal to go from this House.

He made a reference to a particular issue. Of course, I was not a Minister at that time. But I cannot but speak for the Ministry. Five Directors were chosen. He himself has admitted that all the five of them are celebrated. I am not saying that others arc not celebrated. I will find out exactly how these five were chosen. But I have no doubt in my mind that the five chosen arc really celebrated. He referred to Bhupen Hazarika. He is a recipient of the Dadasaheb Phalke Award. He is a living legend.

It is not true to say that they have been ~ given Rs. 1 crore for thirty minutes. They have been offered Rs. 1 crore for thirty episodes. They did not apply. The HRD Ministry and the Information Ministry together invited them. I do not want any reflection or aspersion[1] to be cast on the professional proficiency of these five Directors. This was done to ensure a quality feature film at least once in a week for this one year. .^*(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AJIT P. K. JOGI) Please make the intervention brief.

SHRI S. JAIPAL READDY: Mr. Vice-Chairman, I was not supposed to answer this. I am concerned because I do not want the celebrated Directors .....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AJIT P. K. JOGI): I have a list of 18 persons pending before me. We have to finish it.'

SHRI S. JAIPAL REDDY: I agree.

As for the casual staff, I am trying to look into it. We are setting up the Prasar Bharati Board. I am sure that the Prasar Bharati Board will look into the difficul ties. I share your concern for the casual staff.

SHRI SHATRUGHAN SINHA: Thank you very much, Sir.

RE. NEED TO FILL UP VACANCIES OF GOVERNORS

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AJIT P.K. JOGI): Mr. John Fernandes. Be brief.

SHRI JOHN F. FERNANDES (GOA): I will be very brief.

There is an urgent need for appointment of Governors in many States. More than half-a-dozen Governors in various States have not been appointed, and their charges have been given to other State Governors.

I have a problem in my State. The Governor of my State was promoted to ; U. P. I don't want him to come back to - my State. But Dr. P. C. Alexander,